समुद्री मात्स्यिकी एक टिकाऊ जीविकोपार्जन रोजगार के रूप में अपनाने में बढत अद्यतन जन-गणना सांख्यिकी की रिपोर्ट

मिनी के.जी., सोमी कुरियाकोस और टी.वी.सत्यानन्दन
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोची, केरल
लेखक से संपर्कः minikg@rediffmail.com

भारत में मात्स्यिकी सेक्टर से कई दश लाख लोगों को रोज़गार प्रदान किया जाता है। इस बात का खंडन नहीं किया जा सकता है कि प्रभावकारी प्रबंधन व्यवस्थाएं तैयार करने के लिए मात्स्यिकी संपदाओं के फसल संग्रहण, संसाधन और विपणन में लगे हुए लोगों का आंकडा प्रमुख है, क्योंकि संपदा के आधार पर लोगों तथा उनके आपसी विचार-विमर्शों का प्रबंधन करना ही मात्स्यिकी प्रबंधन है। भारत और अन्य कहीं जगहों में यह कमी व्यक्त की गयी है कि मात्स्यिकी के संबंध में विश्वास योग्य आंकडा प्राप्त नहीं किया जा रहा है। केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ) द्वारा वर्ष 2005 और 2010 के दौरान आयोजित समुद्री मात्स्यिकी जनगणना इस दिशा पर किया गया सराहनीय प्रयास है। यह जनगणना नीतिकारों, अनुसंधेताओं और इस क्षेत्र के अन्य कई लोगों के लिए उपयोगी महत्वपूर्ण सूचनाएं प्रदान करती है।

भारत विश्व में सब से अधिक मछली उत्पादन करने वाले प्रमुख दस देशों में एक है और यहाँ 4.0 मिलियन लोग आजीविका के लिए मत्स्यन और इस से जुडी हुई गतिविधियों में लगे हुए हैं। महिला और पुरुष अपने रीति रिवाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव के प्रसंग में अलग रूप से या संपूरक रूप से मत्स्यन या इस से जुडी हुई गतिविधियों में लगे हुए हैं। भारत के कई भागों में महिलाएं छोटे हस्त जालों से मोलस्कों का संग्रहण, तटीय समुद्र से मत्स्यन आदि कार्यों में लगी हुई हैं। साधारणतया महिलाएं मछली संग्रहण से पूर्व या संग्रहणोत्तर मत्स्यन गतिविधियों में मछुआरों की मदद करती हैं और मछुआरे मछली पकडने के लिए समुद्र जाते वक्त घरेलू कामकाजों में लगी जाती हैं।

अखिल भारतीय समुद्री मात्स्यिकी जनगणना अप्रैल-मई 2010 के दौरान आंकडा संग्रहण कार्य के लिए किया गया एक सम्मिलित प्रयास है। पशु पालन, डेरी एवं मात्स्यिकी (डी ए एच डी एफ), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निधिबद्ध इस महान कार्य की योजना, परिकल्पना और कार्यनिष्पादन केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा किए गए। जनगणना के अंतर्गत

समुद्रवर्ती राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र पश्चिम बंगाल, उडीषा, आंध्र प्रदेश, तमिल नाडु, केरल, कर्नाटक, गोवा, महाराष्ट्र, गुजरात, पुतुच्चेरी और दामन एवं दियु हैं। मछुआरों के स्तर और क्षमताओं पर डाटाबेस के सशक्तीकरण के बृहत् उद्देश्य से जनगणना आयोजित की गयी थी, फिर भी इस में राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी परिवेश के लिंग पर आधारित पहलुओं को भी शामिल किया गया। इस जनगणना में उपयुक्त की गयी अनुसूची में भारतीय समुद्री तटों पर रहने वाले मछुआरा कुटुम्बों के लिंगवार सामाजिक, शैक्षिक और पेशेवर स्तर पर श्रेणीगत सूचनाएं सम्मिलित हैं। इस के अंदर पूरे मत्स्यन गाँवों के समूचे विषयों की गिनती की गयी।

नौ समुद्रवर्ती राज्यों, पुतुच्चेरी और दामन एवं दियु संघ राज्य क्षेत्रों में विस्तृत लगभग 6068 किलो मीटर की भारतीय तटरेखा में 1511 समुद्री मछली अवतरण केंद्र (द्वीप क्षेत्रों को छोडकर) मौजूद हैं। भारत में मत्स्यन गाँवों की संख्या वर्ष 2005 के 3, 202 की अपेक्षा वर्ष 2010 में 3, 288 तक बढ़ गयी जिस में 86 गाँवों की वृद्धि हुई है। समुद्री मात्स्यिकी जनगणना 2010 के अनुसार 8.64 लाख परिवारों में लगभग 4.0 मिलियन समुद्री मछुआरे लोग रहते हैं। वर्ष 2005 में आयोजित पिछली जनगणना की अपेक्षा मछुआरा जनसंख्या और परिवारों की संख्या में 14% की वृद्धि हुई है। कर्नाटक और गोवा को छोडकर वर्ष 2005 से 2010 तक सभी राज्यों में जनसंख्या की वृद्धि हुई है (चित्र 1)। वर्ष 2005 की तरह तमिल नाडु में 1076 किलो मीटर की तटरेखा में रहने वाले मछुआरों की संख्या देश की कुल मछुआरा आबादी का 20% है और तमिल नाडु अन्य राज्यों की अपेक्षा सब से आगे है।

समुद्री मात्स्यिकी जनगणना 2010 के अनुसार कुल मछुआरों में पुरुष और महिलाओं का अनुपात 1000 पुरुष के लिए 928 महिलाएं हैं और मछुआरा आबादी का 48.1% महिलाएं हैं, जबकि वर्ष 2005 में महिलाओं की संख्या 948 थी। सब से अधिक लिंग अनुपात याने कि 982 पुतुच्चेरी में रिकार्ड किया गया। वर्ष 2005 में केरल में 980 का सब से अधिक लिंग अनुपात रिकार्ड किया गया था।

वर्तमान जनगणना में कुल मछुआरों का 29% प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर, 24% हायर सेकन्डरी के स्तर पर, 5% हायर सेकन्डरी के ऊपर के स्तर पर और बाकी 42% अनपढ़ हैं। वर्ष 2010 की जनगणना में मछुआरों के शैक्षिक स्तर की लिंगवार सूचना इकट्ठा की गयी है। इस से यह दिखाया पडता है कि पुरुष और महिलाओं के बीच साक्षरता का स्तर केरल और

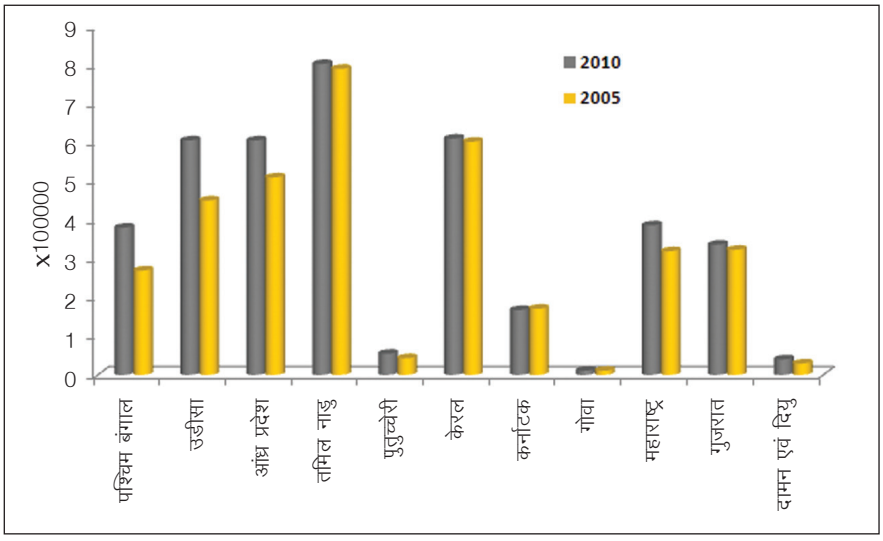

चित्र 1. भारत की समुद्री मात्स्यिकी जनसंख्या

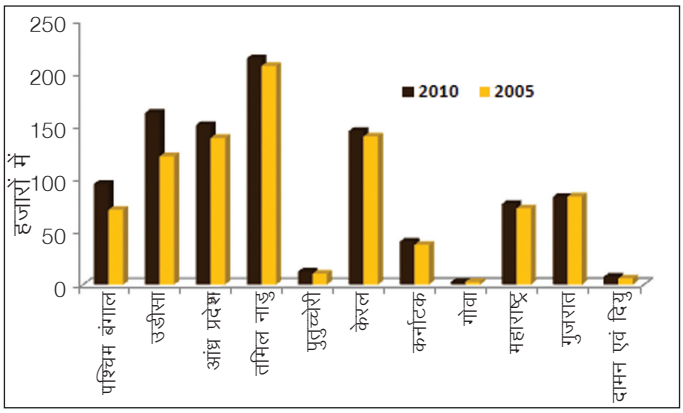

चित्र 2. भारत के सक्रिय मछुआरे

तमिल नाडु में अधिकतम है। पश्चिम बंगाल और कर्नाटक को छोडकर बाकी अन्य राज्यों / संघ राज्य क्षेत्रों में पुरुष और महिलाओं के बीच साक्षरता का अंतर काफी अधिक है।

संग्रहित आंकडे सक्रिय मत्स्यन (पूर्णकालिक, अर्धकालिक या कभी कभी) में लगे हुए मछुआरों की सूचना प्रदान करते हैं। भारत में कुल 26.2 लाख वयस्क मछुआरे हैं। लगभग 61.1% मछुआरे मत्स्यन और इस से जुडे हुए कार्यों में लगे हुए हैं और इन में अधिकतम आंध्र प्रदेश (76.2%) में और न्यूनतम केरल (45.8%) में हैं। कुल समुद्री मछुआरों में से 9.9 लाख लोग सक्रिय मत्स्ययन में लगे हुए हैं, जिन का 83.4% पूर्ण कालीन मत्स्यन कार्यों में लगे हुए हैं। सभी समुद्रवर्ती राज्यों में सक्रिय मछुआरों की संख्या में सामान्य तौर पर वृद्धि होने पर भी पश्चिम बंगाल और उड़ीषा में आंकडे में बडा अंतर देखा जाता है (चित्र 2)। लगभग 0.63 लाख मछुआरे मछली संततियों के संग्रहण में लगे हुए हैं, जिनमें 54.4% पूर्णकालीन मत्स्यन और 45.6% अंशकालीन मत्स्यन कार्य में लगे हुए हैं। करीब 0.36 लाख महिलाएं मछली संतति संग्रहण में लगी हुई हैं।

मछुआरों का 23.4% लोग मत्स्यन और इस से जुडे हुए कार्यों में लगे हुए है और यह महाराष्ट्र में अधिकतम (41.8%) और तमिल नाडु में न्यूनतम (12.8%) है। मत्स्यन से जुडी हुई कार्यविधियों में मछली विपणन, जाल निर्माण / मरम्मत, उपचार / संसाधन, छिलका उतारना, श्रमिक कार्य आदि शामिल हैं। इन कार्यविधियों का विवरण चित्र 3 में दिया जाता है।

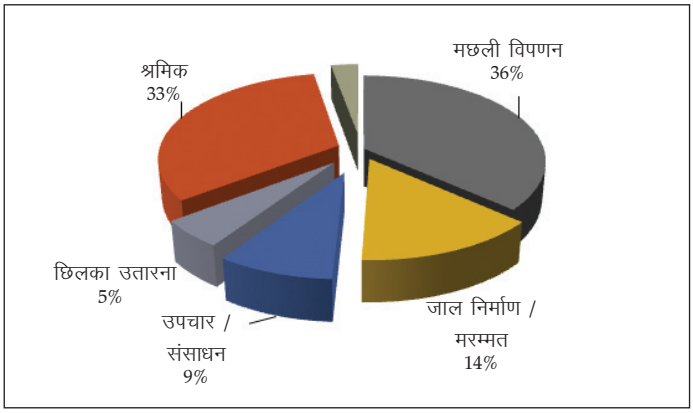

चित्र 3. भारत के मछुआरों की पेशेवर रूपरेखा (मत्स्यन से जुडी हुई कार्यविधियाँ)

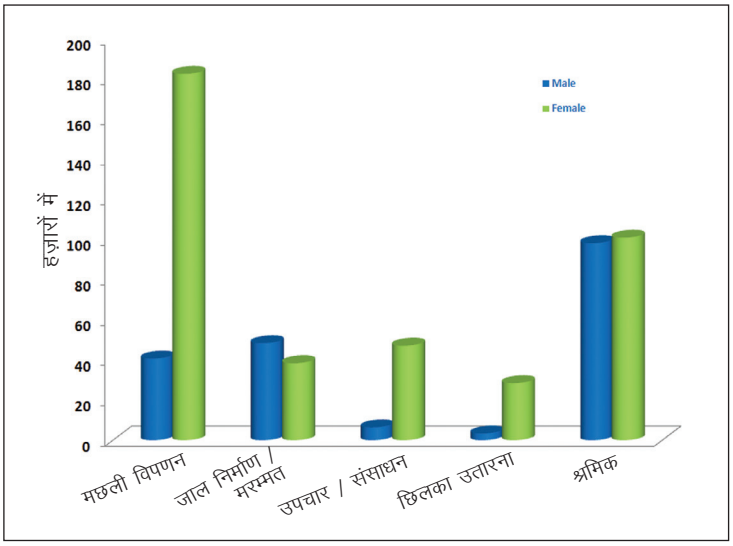

चित्र 4. भारत में मत्स्यन से जुडी हुई कार्यविधियों का लिंगवार विवरण

मात्स्यिकी सेक्टर को पुरुष अधिकार क्षेत्र माना जाता है क्योंकि इस क्षेत्र में साहसिकता और जोखिम अधिक होते हैं और पुरुष इनका सामना करते हैं, लेकिन महिलाएं इन कार्यों से अलग रहती हैं। फिर भी मत्स्यन से जुडी हुई कार्यविधियों में पुरुष और महिलाएं दोनों भाग लेते हैं (चित्र 4)। इस से अतिरिक्त आय जगाया जा सकता है और सक्रिय मछुआरे का कार्यभार कम किया जा सकता है। महिलाएं मत्स्यन से जुडी हुई कार्यविधियों में लगी होने पर भी उनके कार्य के स्वभाव और उनकी सहभागिता का विस्तार विभिन्न होते हैं। उनकी भूमिका विपणन, संसाधन और श्रमिक के कार्य तक विस्तृत होती है। इन कार्यविधियों में मछुआरों की सहभागिता यान के स्वामित्व, धर्म और शैक्षिक स्तर पर निर्भर होती है। मत्स्यन से जुडे हुए कार्यों का 67% महिलाएं करती हैं। पश्चिम बंगाल को छोडकर बाकी सभी राज्यों में मत्स्यन से जुडी हुई कार्यविधियाँ पुरुषों की तुलना में महिलाओं द्वारा की जाती हैं (चित्र 5)।

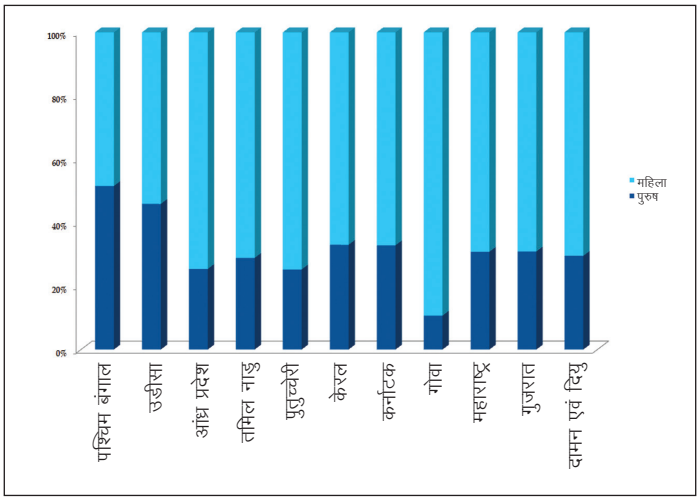

चित्र 5. मत्स्यन से जुडी हुई कार्यविधियों का राज्यवार विवरण

मछली के विपणन में महिलाओं की सक्रिय भूमिका और विस्तृत सहभागिता होती हैं। मछली विपणन में लगे हुए मछुआरों का 81.8% महिलाएं हैं। इस पर प्राप्त राज्यवार आंकडों से यह व्यक्त होता है कि उत्तरपूर्व राज्य पश्चिम बंगाल और उडीषा को छोडकर बाकी राज्यों में महिलाएं इस कार्यविधि में प्रमुख योगदान करती हैं। अधिकांश तटीय राज्यों में जाल निर्माण / मरम्मत कार्य में पुरुषों का ज्यादा अधिकार होता है। पश्चिम बंगाल में महिलाएं व्यापक रूप से इस कार्य में लगी हुई हैं और इस दिशा में उनका योगदान 72% है। समुद्री मछली प्रग्रहण पुरुषों का अधिकार क्षेत्र होने पर भी छिलका उतारना, उपचार और संसाधन जैसे संग्रहण पूर्व और संग्रहणोत्तर कार्यों में महिलाओं की प्रमुखता ज्यादा होती है। उपचार और संसाधन कार्यों में महिलाओं का 88% और छिलका उतारने के कार्य में 90% योगदान है।

यंत्रीकरण और श्रम गहनता होने वाली मत्स्यन प्रौद्योगिकियों का प्रतिस्थापन अधिक रूप से होने पर भी समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में रोजगार के स्तर और अवसर बढ़ते जा रहे हैं। समुद्री मात्स्यिकी केवल मत्स्यन गाँव के मछुआरों को नहीं, बल्कि निकटवर्ती गाँवों और गाँव के अंदर के लोगों को भी रोजगार प्रदान करती है। मात्स्यिकी के क्षेत्र में प्रौद्योगिकियों के परिवर्तन से कई सुधार हो गए हैं। मोबाइल फोन और जी पी एस जैसे इलेक्ट्रोनिक उपकरणों का उपयोग मछुआरों को बेहत्तर मछली पकड़ और बेहत्तर आमदनी के लिए दूर तक जाने में सहायक निकला है। भारत में परंपरागत रूप से समुद्री मछली पकड़ एक सामुदायिक धंधा है, फिर भी बाद में अन्य समुदाय के लोग भी बडी संख्या में इस क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं।